National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 10-07-2025, Accepted: 09-08-2025, Published: 25-08-2025
Volume 10, Issue 3, 2025, Page No. 41-44

# महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

**डॉ० सुनीता गुप्ता[1], आकांक्षा सिंह[2]**
[1] एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
वर्तमान युग विज्ञान, तकनीक एवं वैश्वीकरण से प्रभावित आधुनिकता का युग है, जिसने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में गहन परिवर्तन किए हैं। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी आधुनिक मूल्यों, विचारों, जीवनशैली एवं प्रौद्योगिकी के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है, ताकि यह समझा जा सके कि वे किस प्रकार पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों एवं आधुनिक परिवर्तनों के बीच सामंजस्य स्थापित कर पा रहे हैं।इस अध्ययन में विद्यार्थियों की दृष्टि से आधुनिकीकरण के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा व्यक्तिगत पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी आधुनिकीकरण को अवसर, प्रगति और नवाचार का माध्यम मानते हैं, किन्तु कुछ विद्यार्थी इसके नकारात्मक प्रभाव जैसे–सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और सामाजिक असमानताओं को भी रेखांकित करते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन उच्च शिक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों की सोच, दृष्टिकोण और सामाजिक परिवर्तन की दिशा को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

**मूल शब्दः** महाविद्यालय, आधुनिकीकरण, विद्यार्थी, अभिवृत्ति, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि।

## प्रस्तावना
आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, संचार एवं जीवन–शैली सभी पर आधुनिकीकरण की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विशेष रूप से महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह वर्ग नवाचार, परिवर्तन और प्रगतिशील सोच का संवाहक माना जाता है। आज के विद्यार्थी पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारधाराओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी सोच, दृष्टिकोण और जीवन–पद्धति में आधुनिकीकरण की झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, दृष्टिकोण विकास और सामाजिक चेतना के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उनकी अभिवृत्ति में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होता है। अतः महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन न केवल उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक परिवेश को समझने में सहायक होगा, बल्कि यह शिक्षा व्यवस्था और समाज दोनों के लिए प्रासंगिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः** वर्तमान युग विज्ञान और तकनीकी प्रगति का युग है, जहाँ समाज निरंतर आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर है। आधुनिकीकरण केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं वैचारिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन लाता है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी इस परिवर्तनशील प्रक्रिया के केंद्र में होते हैं, क्योंकि वे ही भविष्य के समाज निर्माता, नीति निर्धारक और नवाचार के संवाहक होते हैं। विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन यह समझने में सहायक होता है कि वे आधुनिक जीवन मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी नवाचार, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक परिवर्तन को किस प्रकार ग्रहण कर रहे हैं। इस प्रकार का अध्ययन शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधारों, नीतिगत दिशा–निर्देशों और पाठ्यचर्या विकास के लिए आधार प्रदान करता है। साथ ही यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, उनकी सामाजिक भूमिकाओं और जीवन दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा देने में भी सहायक होता है। इसलिए यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि इसके निष्कर्ष न केवल शैक्षिक शोध के क्षेत्र में योगदान करेंगे, बल्कि समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु भी उपयोगी सिद्ध होंगे।

**सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकनः** सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।
किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है ।

**सम्बंधित साहित्यः** अनर्थ प्राची (2022) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। आधुनिकीकरण के विभिन्न आयामों के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्र छात्राओं का चयन सरल यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया और निष्कर्ष में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। उपरोक्त वर्णित आधुनिकता के सिर्फ नारी दशा, वैवाहिक संबंध व सामाजिक सांस्कृतिक तथ्यों के आधारित आयामों का ही अध्ययन किया गया है व उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में आधुनिकता के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है।

शर्मा ,मंजू एवं यादव अनीता (2022) ने माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर होता है जबकि आधुनिकीकरण में शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नही मिला ।

गुप्ता किरण (2023) ने स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विज्ञान तथा कला समूह के छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर होता है जबकि कला व वाणिज्य समूह के छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर नहीं होता है।

**अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन के निम्नवत उद्देश्य हैं**

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनायें–प्रस्तुत अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं के अंतर्गत सम्पादित किया गया है–**

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध विधिः** प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

**जनसंख्याः** इस शोध अध्ययन में उ० प्र० के जौनपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के सभी विद्यार्थी इस शोध की जनसंख्या होंगें।

**न्यादर्शनः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में उ० प्र० के जौनपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत 50 छात्र (25 कला व 25 विज्ञान वर्ग के) तथा 50 छात्राएं (25 कला व 25 विज्ञान वर्ग के) को सरल यादृच्छिक न्यादर्शन के क्रम में न्यादर्श के रूप में चुना गया है ।

**शोध उपकरणः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने के लिए स्वनिर्मित आधुनिकीकरण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है ।

**प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है ।

**प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं के अंतर्गत सम्पादित किया गया है–**

परिकल्पना –1 महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**तालिका 1:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण समूह

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | स्वतन्त्रता मान | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | .05 स्तर | .01 स्तर |
| छात्र | 50 | 11.54 | 1.75 | 98 | 3.07 | सार्थक अंतर है। | सार्थक अंतर है। |
| छात्राएं | 50 | 12.70 | 2.02 | | | | |

उपर्युक्त तालिका 1 में महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण दिया गया है । प्रथम समूह महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का है जिनका मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.54 व 1.75 है जबकि दूसरा समूह महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं का है जिनका मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.70 व 2.02 है ।

दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका मान 3.07 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है अतः दोनों मध्यमानों में अंतर सार्थक है अर्थात महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है । इस प्रकार शोधकर्त्री की परिकल्पना संख्या 1 असत्य सिद्ध होती है ।

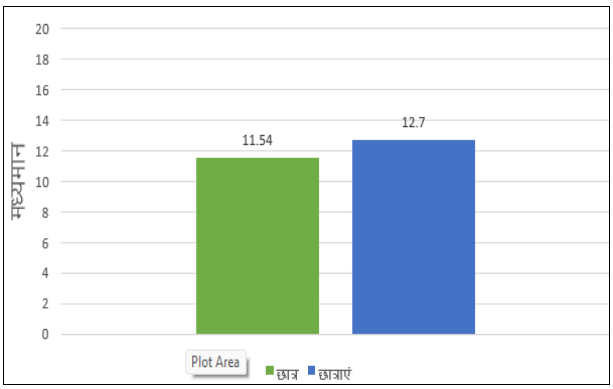


**ग्राफ 1.1:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

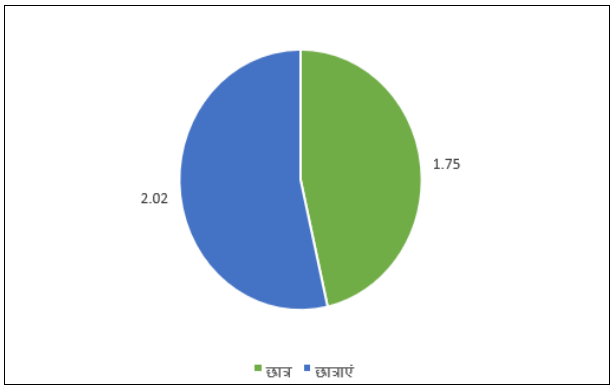


**ग्राफ 1.2:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण(मानक विचलन)

परिकल्पना –2 महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**तालिका 2:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | स्वतन्त्रता मान | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | .05 स्तर | .01 स्तर |
| कला | 50 | 11.30 | 1.62 | 98 | 4.56 | सार्थक अंतर है। | सार्थक अंतर है। |
| विज्ञान | 50 | 12.94 | 1.96 | | | | |

उपर्युक्त तालिका 2 में महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण दिया गया है । प्रथम समूह महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग के विद्यार्थियों का है जिनका मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.30 व 1.62 है जबकि दूसरा समूह महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का है जिनका मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 12.94 व 1.96 है । दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका मान 4.56 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है अतः दोनों मध्यमानों में अंतर सार्थक है अर्थात महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।इस प्रकार शोधकर्त्री की परिकल्पना संख्या 2 असत्य सिद्ध होती है।

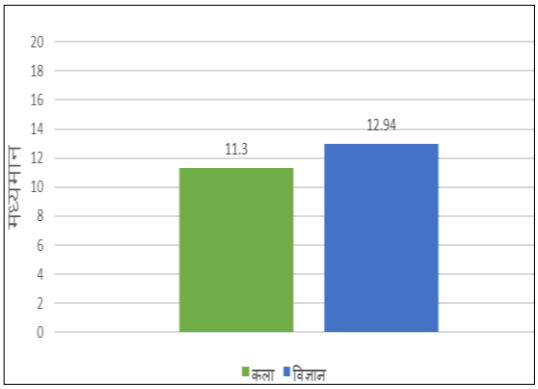


**ग्राफ 2.1:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

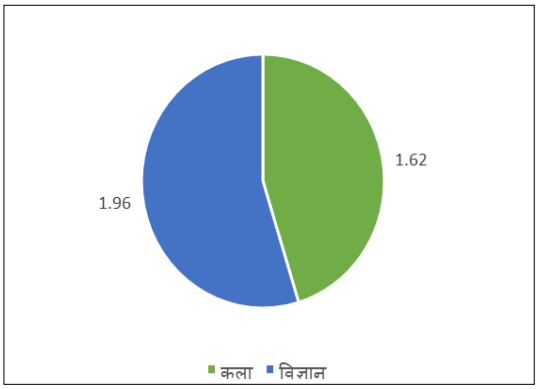


**ग्राफ 2.2:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का विवरण(मानक विचलन)

**निष्कर्ष:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर होने से संबंधित परिकल्पना के आधार पर किया गया अध्ययन यह इंगित करता है कि दोनों लिंगों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में आधुनिकता के प्रति अलग–अलग प्रकार की सोच, अनुभव तथा स्वीकार्यता पाई जाती है। जहाँ छात्र आधुनिकीकरण को प्रायः तकनीकी प्रगति, कैरियर विकास, स्वतंत्रता और सामाजिक गतिशीलता से जोड़ते हैं, वहीं छात्राएँ आधुनिकता को शिक्षा के अवसरों, सामाजिक समानता, आत्मनिर्भरता तथा पारंपरिक रूढ़ियों से मुक्ति के रूप में देखती हैं। इस प्रकार, दोनों के दृष्टिकोण में मूल्य, अपेक्षाएँ एवं प्राथमिकताएँ भिन्न–भिन्न रूप में सामने आती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता के प्रति उनकी अभिवृत्ति समान न होकर लिंग–आधारित भिन्नताओं से प्रभावित है। अतः यह परिकल्पना प्रमाणित होती है कि महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर विद्यमान है।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति से सम्बंधित परिकल्पना का निष्कर्ष यह है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की सोच, दृष्टिकोण एवं जीवन मूल्यों में स्पष्ट रूप से सार्थक अंतर पाया गया है। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी जहाँ आधुनिक तकनीकी साधनों, नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा व्यवहारिक जीवन में आधुनिकता को शीघ्र स्वीकारने एवं प्रयोग में लाने की प्रवृत्ति अधिक प्रदर्शित करते हैं, वहीं कला वर्ग के विद्यार्थी परंपरागत मूल्यों, सांस्कृतिक धरोहर तथा सामाजिक आदर्शों को अधिक महत्व देते हुए आधुनिकीकरण को संतुलित दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार यह निष्कर्ष स्पष्ट करता है कि अध्ययन की गई परिकल्पना "महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है" स्वीकार योग्य है। यह अंतर विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, विषयगत दृष्टिकोण तथा ज्ञानार्जन की विधियों से प्रभावित होकर उनकी मानसिकता एवं दृष्टिकोण में परिलक्षित होता है।

**शोध की शैक्षिक उपयोगिता:** महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह विद्यार्थियों की सोच, दृष्टिकोण तथा मूल्यों को समझने का अवसर प्रदान करता है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार एवं सांस्कृतिक अनुकूलन की प्रक्रिया से भी जुड़ी है। इस शोध के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि विद्यार्थी आधुनिकीकरण की प्रवृत्तियों जैसे तकनीकी विकास, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, रोजगार के नए अवसरों तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रति कितनी सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इससे शिक्षा नीति–निर्माताओं, शिक्षकों एवं पाठ्यक्रम तैयार करने वालों को यह दिशा मिलेगी कि किस प्रकार शिक्षा को

आधुनिकता के साथ संतुलित करते हुए विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन विद्यार्थियों में मूल्य शिक्षा, नैतिकता एवं परंपरा और आधुनिकता के सामंजस्य को समझने में भी सहायक होगा। उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए यह शोध विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को नई दिशा देने में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार यह शोध अध्ययन न केवल शैक्षिक उपयोगिता को प्रमाणित करता है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी योगदान देता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः**


1. कुमार, ए. (2018): भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रवृत्तियाँ,प्रकाशन भारती, नई दिल्ली।
2. शर्मा, आर. (2019): युवा एवं आधुनिकीकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. ज्ञान भारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. मिश्रा, के. (2017): शिक्षा और आधुनिकीकरण: दृष्टिकोण एवं चुनौतियाँ. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. वर्मा, एस. (2020): महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और मूल्यबोध. विद्यार्थी प्रकाशन, जयपुर।
5. सिंह, पी. (2016): शैक्षिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण का प्रभाव. भारतीय पुस्तक सदन, गोरखपुर।
6. जोशी, एम. (2015): भारतीय उच्च शिक्षा में आधुनिकता का प्रभाव. विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ।
7. तिवारी, ए. (2021): आधुनिकीकरण एवं युवाओं की सामाजिक सोच. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
8. चौधरी, डी. (2018): भारतीय शिक्षा और आधुनिकीकरण की दिशा,अरुण प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. पाण्डेय, एल. (2019): युवा पीढ़ी की अभिवृत्ति: परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व. सरस्वती प्रकाशन, वाराणसी।
10. अग्रवाल, आर. (2022): समकालीन शिक्षा और आधुनिकीकरण: एक आलोचनात्मक दृष्टि, आर्य पुस्तकालय, पटना।
11. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
12. सिंह, अरूण कुमार (2017):मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना ।